

18-महिला जागृति अभियान

अध्याय 1: नारी का परमपूज्य देवी रूप

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: विधाता की संरचना में मातृशक्ति का क्या रूप है?

उत्तर: विधाता की संरचना में मातृशक्ति का रूप माता और देवी का है, जिसे परमपूज्य माना गया है।

2. प्रश्न: देव-युग्मों जैसे लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम में पहले किसका नाम आता है?

उत्तर: देव-युग्मों जैसे लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम में प्रथम स्थान नारी का और उसके बाद नर का आता है।

3. प्रश्न: जीवसृष्टि की संरचना किस आदिशक्ति द्वारा सम्पन्न होती है?

उत्तर: जीवसृष्टि की संरचना आदिशक्ति महामाया द्वारा सम्पन्न होती है, जिन्हें विधाता और माता भी कहा जाता है।

4. प्रश्न: नारी के किन तीन रूपों को विज्ञान का रूप माना गया है?

उत्तर: सरस्वती (ज्ञान), लक्ष्मी (समृद्धि) और काली (शक्ति) के रूप में नारी को विज्ञान का रूप माना गया है।

5. प्रश्न: आत्मिक क्षेत्र में नारी के कौन-से तीन रूप अनुभव किए जाते हैं?

उत्तर: आत्मिक क्षेत्र में नारी को भक्ति, शक्ति और समृद्धि के रूप में अनुभव किया जाता है।

6. प्रश्न: वेदमाता, देवमाता और विश्वमाता के रूप में किसकी पूजा की जाती है?

उत्तर: इन तीनों रूपों में त्रिपदा की पूजा-अर्चना की जाती है, जिसे प्रत्यक्ष रूप में नारी ही कहा जा सकता है।

7. प्रश्न: नर नारी को पाकर क्या बनता है?

उत्तर: नर नारी को पाकर धन्य बनता है और अनेकानेक क्षमताओं का परिचय देने में समर्थ होता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: देवत्व के प्रतीकों में नारी को नर से वरिष्ठ क्यों माना गया है? अपने उत्तर के लिए कम से कम दो कारण बताएँ।

उत्तर: नारी को नर से वरिष्ठ माना गया है क्योंकि, पहला, देव-युग्मों (जैसे उमा-महेश, राधे-श्याम) में नारी का नाम पहले आता है। दूसरा, भाव-सम्वेदना, धर्म-धारणा और सेवा-साधना जैसे गुणों में उसी की वरिष्ठता को चरितार्थ होते देखा जाता है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, यदि नारी रूपी माता न होती तो इस विश्व-ब्रह्माण्ड पर क्या प्रभाव पड़ता?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यदि नारी रूपी माता न होती और वह प्राणियों पर अनुकंपा न बरसाती, तो किसी भी जीवधारी की सत्ता इस विश्व-ब्रह्माण्ड में कहीं भी दिखाई नहीं देती, क्योंकि वही भ्रूण का पोषण करती है, प्रसव-वेदना सहकर जन्म देती है और आरंभिक अवस्था में स्तनपान कराकर रक्षा करती है।

3. प्रश्न: साधना से सिद्धि की परंपरा किस आधार पर प्रकट होती है?

उत्तर: साधना से सिद्धि की परंपरा महाशक्ति के सूक्ष्म स्वरूपों का वरण करने के आधार पर प्रकट होती है। इन सूक्ष्म स्वरूपों में श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा, क्षमता, कला और दूरदर्शिता शामिल हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "वह मानुषी दीख पड़ते हुए भी वस्तुतः देवी है" - इस कथन का विश्लेषण करें। लेखक ने इस बात को सिद्ध करने के लिए क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि नारी भले ही मनुष्य के शरीर में दिखाई देती है, लेकिन उसका सार और गुण देवी के समान हैं। लेखक ने इसे सिद्ध करने के लिए तर्क दिया है कि बालक माता के कलेवर और संस्कारों को लेकर ही संसार में प्रवेश करता है। इसके अलावा, देवत्व के प्रतीकों और देव-युग्मों में नारी को हमेशा प्रथम स्थान दिया गया है, जो उसकी दैवी वरिष्ठता को प्रमाणित करता है।

2. प्रश्न: शक्तिपूजा का समस्त विधि-विधान किस मूल मंतव्य को हृदयंगम कराता है?

उत्तर: शक्तिपूजा का समस्त विधि-विधान इस मूल मंतव्य को हृदयंगम कराता है कि संसार में जो कुछ भी सशक्त, सम्पन्न और सुन्दर है, उसकी उत्पत्ति में नारीतत्त्व की ही प्रमुख भूमिका है। इसलिए, नारी की विशिष्टता को नमन किया जाना चाहिए और उसकी अभ्यर्थना के लिए सभी को प्रेरित होना चाहिए। यही कारण है कि तत्त्ववेत्ता अनादिकाल से नारी का ऐसा ही मूल्यांकन करते रहे हैं।

अध्याय 2: नारी-जीवन के दुर्दिन और दुर्दशा

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: किस काल को नारी के लिए सामन्तवादी अन्धकार युग कहा गया है?

उत्तर: मध्यकाल को नारी के लिए सामन्तवादी अन्धकार युग कहा गया है।

2. प्रश्न: अन्धकार युग में नारी को क्या समझा जाने लगा?

उत्तर: अन्धकार युग में नारी को अबला, कामिनी, रमणी, भोग्या और क्रीतदासी जैसी घिनौनी स्थिति में समझा जाने लगा।

3. प्रश्न: मध्यकाल में कन्या के जन्म को किसका सूचक माना जाता था?

उत्तर: मध्यकाल में कन्या के जन्म को दुर्भाग्य का सूचक माना जाता था।

4. प्रश्न: पुरुषों के लिए "पत्नीव्रत" का कोई अनुबन्ध न होते हुए स्त्री के लिए क्या अनिवार्य था?

उत्तर: पुरुषों के लिए "पत्नीव्रत" का कोई अनुबन्ध नहीं था, जबकि स्त्री के लिए पतिव्रत अनिवार्य था।

5. प्रश्न: नारी को किन अधिकारों से वंचित करके घर की चहारदीवारी में कैद कर दिया गया?

उत्तर: नारी को मानवोचित अधिकारों से वंचित करके पिंजड़े में बन्द पक्षी की तरह घर की चहारदीवारी में कैद कर दिया गया।

6. प्रश्न: जब एक और एक अंक को ऊपर-नीचे रखकर घटाया जाता है, तो क्या शेष बचता है?

उत्तर: जब एक को ऊपर व एक को नीचे रखकर घटाया जाता है, तो शून्य ही शेष बचता है। यह नर-नारी के पिछड़ेपन की स्थिति को दर्शाता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: मध्यकाल में स्त्री और पुरुष के लिए अलग-अलग आचार-संहिताओं के तीन उदाहरण दीजिए।

उत्तर: मध्यकाल में स्त्री-पुरुष के लिए अलग-अलग आचार-संहिताएँ थीं: (१) स्त्री के लिए पतिव्रत अनिवार्य था, पर पुरुष के लिए पत्नीव्रत नहीं। (२) स्त्री के लिए घूँघट आवश्यक था, पर पुरुष खुले मुँह घूम सकता था। (३) विधवा पर अनेक प्रतिबन्ध थे, जबकि विधुर कई विवाह कर सकता था।

2. प्रश्न: "पूज्य भाव कुदृष्टि के रूप में बदला और उसे वासना की आग में झोंककर कल्पवृक्ष को काला कोयला बनाकर रख दिया गया।" इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि नारी के प्रति जो सम्मान और पूजा का भाव होना चाहिए था, वह बुरी नजर (कुदृष्टि) में बदल गया। उसे केवल वासना पूर्ति का साधन समझा गया, जिससे उसकी दिव्य क्षमताओं (कल्पवृष) को नष्ट करके उसे मूल्यहीन (काला कोयला) बना दिया गया।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, नारी की आधी जनशक्ति को अपंग बना देने का पुरुषों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: लेखक के अनुसार, आधी जनशक्ति (नारी) को अपंग और असमर्थ बनाने की नीति ने पुरुषों को भी दंडित किया है। अपने साथी को असमर्थ बनाकर रखने वालों को उसका भार भी वहन करना पड़ता है, जिससे वे भी प्रगति नहीं कर पाते और दोनों ही शून्य जैसी दयनीय स्थिति में पहुँच जाते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: तथाकथित प्रगतिशील और पिछड़े देशों में नारी की समस्याओं में क्या भिन्नता बताई गई है और इसके बावजूद वे किस एक दुर्भाग्य से समान रूप से पीड़ित हैं?

उत्तर: स्रोत में यह बताया गया है कि भारत जैसे पिछड़े देशों में नारी की अपनी तरह की समस्याएँ हैं, जबकि सम्पन्न देशों में दूसरे प्रकार की। हालांकि, समस्याओं के स्वरूप में भिन्नता के बावजूद, वे एक समान दुर्भाग्य से पीड़ित हैं कि दुनिया की इस आधी जनसंख्या को ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जो उनकी प्रगति में बाधा डालती हैं। यदि ये बाधाएँ न होतीं, तो नारी नर की असाधारण सहायिका बनी रहती।

2. प्रश्न: मध्यकाल में नारी के अवमूल्यन के लिए कौन-सी सामाजिक और पारिवारिक प्रथाएँ जिम्मेदार थीं? विस्तार से बताएं।

उत्तर: मध्यकाल में नारी के अवमूल्यन के लिए कई सामाजिक और पारिवारिक प्रथाएँ जिम्मेदार थीं। परिवार में लड़की-लड़के के बीच शिक्षा, दुलार और सुविधाओं में भारी भेदभाव किया जाता था। ससुराल में उसे रसोईदारिन, धोबिन और कामुकता-तृप्ति की साधन-सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। सामाजिक स्तर पर, उसे दोगुना दर्जे का नागरिक समझा जाता था, दहेज की मांग की जाती थी, और विधवा होने पर कठोर प्रतिबंध लगाए जाते थे, जबकि पुरुषों को पूरी स्वतंत्रता थी। इन सभी प्रथाओं ने उसे अपनी विशेषताएँ खोने पर विवश कर दिया।

अध्याय 3: परिवर्तन का तूफानी प्रवाह

सरल स्तर के प्रश्न:

1. **प्रश्न:** लेखक के अनुसार, स्रष्टा को क्या पसंद है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, स्रष्टा को औचित्य और सन्तुलन ही पसन्द है।

2. **प्रश्न:** इक्कीसवीं सदी को क्या कहकर निरूपित किया गया है?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी को महापरिवर्तनों की बेला और "नारी सदी" के नाम से निरूपित किया गया है।

3. **प्रश्न:** सतयुग की वापसी के लक्ष्य में नारी की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: सतयुग की वापसी के लक्ष्य में नारी का खोया हुआ वर्चस्व उसे पुनः प्राप्त होगा, वह अवांछनीयता के बंधनों से मुक्त होगी और विश्व में न्याय स्थापित करने में अपनी महती भूमिका निभाएगी।

4. **प्रश्न:** रानी लक्ष्मीबाई ने मध्यकाल में क्या अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया था?

उत्तर: मध्यकाल में रानी लक्ष्मीबाई ने महिलाओं की एक विशाल सेना खड़ी करके एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया था।

5. **प्रश्न:** वैदिक ऋचाओं के प्रकटीकरण में ऋषियों के समान ही किन्होंने अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया था?

उत्तर: वैदिक ऋचाओं के प्रकटीकरण में ऋषियों की तरह ही ऋषिकाओं ने भी अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया था।

6. **प्रश्न:** कौन-सी कुप्रथा अब लगभग समाप्त हो चुकी है, जिसका उल्लेख स्रोत में है?

उत्तर: सती-प्रथा अब लगभग समाप्त हो चुकी है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. **प्रश्न:** लेखक ने समाज में हो रहे परिवर्तनों की तुलना तूफानी अंधड़ों और चक्रवातों से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने इन परिवर्तनों की तुलना तूफानी अंधड़ों और चक्रवातों से इसलिए की है क्योंकि ये परिवर्तन बहुत तेज गति से और बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। जैसे तूफान रेत के टीलों को उड़ा देता है, वैसे ही ये परिवर्तन

सामन्तशाही, जमींदारी और दास-प्रथा जैसी गहरी जड़ों वाली कुरीतियों को समाप्त कर रहे हैं। यह स्रष्टा के अनुशासन की शक्ति को दर्शाता है।

2. प्रश्न: भूतकाल की किन नारीरत्नों का स्मरण करके भविष्य में नारी उत्थान की आशा बलवती होती है? कोई तीन उदाहरण दें।

उत्तर: भूतकाल की नारीरत्नों का स्मरण करके भविष्य की आशा बलवती होती है, जैसे: (१) कुन्ती, जिन्होंने पाँच देव-पुत्रों को जन्म दिया। (२) सीता, जिनकी गोद में लव-कुश खेले। (३) शकुन्तला, जिन्होंने चक्रवर्ती भरत का निर्माण किया। (४) अनुसूया, जिनके आँगन में ब्रह्मा, विष्णु, महेश बालक बनकर खेले।

3. प्रश्न: "अनीति की असुरता ने समय-समय पर सिर उठाया है, पर उसका आतंक सदा-सर्वदा स्थिर नहीं रह सकता है।" इस कथन से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इस कथन से लेखक का तात्पर्य है कि समाज में अन्याय और गलत प्रथाएं (अनीति की असुरता) भले ही कुछ समय के लिए शक्तिशाली हो जाएं, लेकिन वे स्थायी नहीं होतीं। स्रष्टा की संतुलन-व्यवस्था अपने समय पर हस्तक्षेप करती है और ऐसी अवांछनीयता को समाप्त कर देती है। जैसे कुरुरमुत्ते लंबी आयु लेकर नहीं जन्मते, वैसे ही अनीति भी अंततः औचित्य के सामने हार जाती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी को "नारी सदी" क्यों कहा जा रहा है? इस महापरिवर्तन के पीछे कौन-सी शक्तियाँ कार्यरत हैं?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी को "नारी सदी" इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि यह वह समय है जब नारी का खोया हुआ वर्चस्व उसे पुनः प्राप्त होगा। इस महापरिवर्तन के पीछे दो मुख्य शक्तियाँ कार्यरत हैं। पहली, स्रष्टा की संतुलन-व्यवस्था या दैवी चेतना, जो अनीति को समाप्त कर सुव्यवस्था स्थापित करती है। दूसरी, मानवीय पुरुषार्थ, जिसमें सामाजिक और राजनीतिक क्रांतियाँ शामिल हैं, जो इन परिवर्तनों को साकार रूप देती हैं। यह परिवर्तन पश्चिम के नारी-मुक्ति आन्दोलन से अलग, दैवी चेतना द्वारा संचालित माना गया है।

2. प्रश्न: लेखक ने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान को किस प्रकार वर्णित किया है और इससे क्या सिद्ध होता है?

उत्तर: लेखक ने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान को अत्यंत समर्थ बताया है, जिसे देखकर न केवल भारत, बल्कि संसार भर के विद्वान भी चकित रह गए थे। उन्होंने बताया कि संग्राम में भाग लेने वाली अनेक महिला प्रतिभाएँ किसी भी दिग्गज पुरुष से कम नहीं थीं। इससे यह सिद्ध होता है कि अवसर मिलने पर भारतीय महिलाएँ कितनी समर्थ और यशस्वी हो सकती हैं और उनका इतिहास ऐसे महान व्यक्तित्वों और कर्तृत्वों से भरा पड़ा है।

अध्याय 4: नई शताब्दी—नारी शताब्दी

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखिका के अनुसार, नई शताब्दी में नारी किस स्थिति से उभरकर अपना वर्चस्व दिखाने आ रही है?
उत्तर: नई शताब्दी में नारी अन्धकार युग से उभरकर नए सिरे से अपने वर्चस्व का परिचय देने के लिए ऊपर आ रही है।
2. प्रश्न: अमेरिका, जापान, जर्मनी, रूस जैसे समुन्नत देशों में नारी की स्थिति कैसी है?
उत्तर: इन देशों में नारी उन सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी है, जिनमें पुरुष अपने पुरुषार्थ का परिचय देते रहे हैं, जैसे राजनीति, विज्ञान और अर्थशास्त्र।
3. प्रश्न: मैडम क्यूरी किस क्षेत्र में अपने अनुसन्धान के लिए जानी जाती हैं?
उत्तर: मैडम क्यूरी अपने वैज्ञानिक अनुसन्धानों के लिए जानी जाती हैं।
4. प्रश्न: मदर टेरेसा की प्रसिद्धि का मुख्य कारण क्या था?
उत्तर: मदर टेरेसा दरिद्रों के प्रति अपनी करुणा और सेवा के लिए प्रसिद्ध थीं।
5. प्रश्न: भारत के किस छोटे प्रान्त ने लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में अन्य सभी क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया है?
उत्तर: भारत के केरल प्रान्त ने लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में अग्रगामी होकर अन्य सभी क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया है।
6. प्रश्न: केरल की महिलाओं ने विवाह की न्यूनतम आयु के लिए सरकार से क्या कानून पास कराया?
उत्तर: उन्होंने सरकार से यह कानून पास कराया कि 26-27 वर्ष से कम उम्र की महिला और 29 वर्ष से कम आयु का पुरुष शादी न कर सके।
7. प्रश्न: केरल में महिला शिक्षा और विवाह की आयु बढ़ाने के कौन-से तीन अच्छे परिणाम सामने आए?
उत्तर: इसके तीन परिणाम सामने आए: जनसंख्या-वृद्धि रुक गई, शिक्षितों ने देश-विदेश में आजीविका पाई और प्रदेश की समृद्धि बढ़ी।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने किन पाँच महिला राजनेत्रियों का उल्लेख किया है जो यह दर्शाती हैं कि राजनीति में भी नारी का वर्चस्व रहा है?
उत्तर: लेखक ने इन्दिरा गाँधी, गोल्डामायर, माग्रेट थेचर, भण्डारनायक और कोरा एक्वीनो का उल्लेख किया है, जिनका नाम राजनीति के क्षेत्र में हर किसी की ज़बान पर रहा है।
2. प्रश्न: "यह सब गत शताब्दी में सम्भव हुआ है। अब, इस उभार में और अधिक उफान आने की पूरी-पूरी सम्भावना है।" इस कथन से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इस कथन से लेखक का तात्पर्य है कि पिछली सदी (20 वीं सदी) में नारी प्रगति की जो शुरुआत हुई है, वह केवल एक झलक मात्र है। आने वाली सदी में यह प्रगति की लहर और भी तेज होगी और यह रुकेगी नहीं, जब तक नर और नारी को समान दर्जा नहीं मिल जाता।

3. प्रश्न: केरल का उदाहरण देकर लेखक यह कैसे सिद्ध करते हैं कि नारी समाज का उत्साह पूरे प्रदेश की प्रगति में सहायक हो सकता है?

उत्तर: लेखक बताते हैं कि केरल में नारी समाज के निजी उत्साह ने शिक्षा को बढ़ावा दिया, विवाह की आयु बढ़ाई, जिससे जनसंख्या नियंत्रित हुई। इसके फलस्वरूप शिक्षित लोगों को बेहतर रोजगार मिला, प्रदेश समृद्ध हुआ, सरकार खाद्य पदार्थों पर छूट दे पाई और अपराध भी कम हो गए। यह सिद्ध करता है कि नारी की प्रगति पूरे समाज की प्रगति का आधार बनती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, पश्चिम के नारी-मुक्ति आन्दोलन और भारत में हो रहे महिला जागरण में क्या मूलभूत अंतर है?

उत्तर: स्रोतों के अनुसार, पश्चिम का नारी-मुक्ति आन्दोलन (विमन लिब) एक अलग प्रक्रिया है, जबकि भारत में महिला शक्ति के जागरण की प्रक्रिया दैवी चेतना द्वारा संचालित है, जो बुद्धि की आकांक्षा के अनुरूप चल रही है। इसका लक्ष्य सतयुग की वापसी है, जिसमें नारी विश्व रंगमंच पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

2. प्रश्न: माण्टेसरी, फ्लोरेन्स नाइटिंगेल और मेरी स्टोप ने समाज में क्या क्रान्तिकारी योगदान दिए? उनके कार्यों का समाज पर क्या दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा?

उत्तर: माण्टेसरी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति की, फ्लोरेन्स नाइटिंगेल ने रेडक्रॉस आन्दोलन की शुरुआत की, और मेरी स्टोप ने परिवार-नियोजन कार्यक्रम चलाया। इन कार्यों का समाज पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा। माण्टेसरी की शिक्षा पद्धति ने बच्चों को सीखने का नया तरीका दिया, नाइटिंगेल के काम ने आधुनिक नर्सिंग की नींव रखी और स्टोप के कार्यक्रम ने परिवार नियोजन के महत्व को स्थापित किया, जिससे महिलाओं के स्वास्थ्य और समाज की आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक असर पड़ा।

अध्याय 5: भारत अग्रणी था—अग्रणी रहेगा

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: संघमित्रा और आम्नपाली ने विश्व कल्याण के लिए क्या किया था?

उत्तर: संघमित्रा और आम्नपाली ने अपने सुख-सुविधाओं को त्यागकर विश्व कल्याण के लिए संसार भर में बौद्ध मठों की स्थापना और संगठन का कार्य किया था।

2. प्रश्न: भारत में पंचायती राज में नारी को कितना प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की गई है?

उत्तर: भारत में पंचायती राज में चुने हुए पंचों में नारी को तीस प्रतिशत अनुपात से चुने जाने की घोषणा हुई है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार नारी के नवजीवन का स्वर्णिम काल कैसा होगा?

उत्तर: लेखक के अनुसार, अगले दिनों में नारी स्वाभाविक रूप से अधिक समर्थ, कुशल और सुसंस्कृत बनेगी, और यही उसके नवजीवन का स्वर्णिम काल होगा।

4. प्रश्न: नारी के किन गुणों की तुलना धरती, ऊर्जा, वर्षा और प्राणवायु से की गई है?

उत्तर: नारी के करुणा, दया, सेवा और समर्पण जैसे गुणों की तुलना इनसे की गई है, क्योंकि इन्हीं गुणों से उसने संसार को सरस, सुन्दर एवं समुन्नत बनाया है।

5. प्रश्न: बुद्ध और गाँधी जैसी देवात्माओं को अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए क्या करना पड़ा?

उत्तर: उन्हें स्वयं तथा उनके सहयोगियों को विश्व-कल्याण के निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए त्याग और साहस भरे प्रयत्न करने पड़े थे।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "टाँग पकड़कर पीछे घसीटने का भौंडा खेल हर किसी के लिए हर दृष्टि से हानिकारक और कष्टदायक ही हो सकता है"?

उत्तर: लेखक यह इसलिए कहते हैं क्योंकि समाज में नर और नारी एक-दूसरे के सहयोगी हैं। यदि एक पक्ष (पुरुष) दूसरे पक्ष (नारी) को आगे बढ़ने से रोकेगा, तो इससे पूरे समाज की प्रगति रुकेगी, जो अंततः दोनों के लिए हानिकारक और कष्टदायक सिद्ध होगा।

2. प्रश्न: "यह सब कुछ अनायास ही नहीं हो जाएगा। नियति चाहे कुछ भी क्यों न हो, पर उनके लिए पुरुषार्थ तो करना ही पड़ता है।" इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर: इस कथन का आशय यह है कि भले ही नारी का उत्थान होना तय (नियति) हो, लेकिन यह अपने आप नहीं होगा। इसके लिए प्रयास (पुरुषार्थ) करना अनिवार्य है। जैसे हनुमान और अर्जुन को दैवी सहायता के बावजूद असाधारण पुरुषार्थ करना पड़ा था, उसी तरह नारी उत्थान के लिए भी त्याग और साहस भरे प्रयत्न करने होंगे।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, शिक्षा और स्वावलम्बन जैसे प्रयासों के बावजूद नारी-उत्थान में सबसे बड़ी कठिनाई क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, इन प्रयासों के बावजूद सबसे बड़ी कठिनाई वे भ्रांतियाँ और मूढ़ मान्यताएँ हैं जो लोकमानस में नारी के प्रति जड़ पकड़ गई हैं। ये मान्यताएँ अदृश्य होते हुए भी इतना अनर्थ कर रही हैं कि उनके सामने दृश्यमान विकास कार्य नगण्य लगते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "नारी युग की अधिष्ठात्री, धरती की देवी अपनी गरिमा सिकोड़े-समेटे और दबाए-दबोचे बैठी रहे, यह विपन्नता क्यों, कैसे और कब तक बनी रह सकती है?" इस प्रश्न के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: इस प्रश्न के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि नारी का दमन और पिछड़ापन एक अस्थायी और अप्राकृतिक अवस्था है। जैसे वसंत आने पर फूल खिलते हैं और सुबह होने पर अंधेरा मिटता है, उसी प्रकार समय के प्रवाह में नारी का उत्थान निश्चित है। उसकी गरिमा और सामर्थ्य को हमेशा के लिए दबाकर नहीं रखा जा सकता और यह अन्यायपूर्ण स्थिति अब समाप्त होने वाली है।

2. प्रश्न: लेखक ने भारत के अहिंसक सत्याग्रह और सामाजिक क्रांति के बीच क्या संबंध स्थापित किया है? वे नारी-मुक्ति आन्दोलन के लिए किस मार्ग का समर्थन करते हैं?

उत्तर: लेखक कहते हैं कि जिस तरह अहिंसक सत्याग्रह ने देश को राजनीतिक स्वतंत्रता दिलाई, उसी का दूसरा भाग (उत्तरार्द्ध) अब सामाजिक क्रांति के रूप में उभरना चाहिए। वे नारी-मुक्ति के लिए पश्चिम के संघर्ष और प्रतिशोध वाले मार्ग के बजाय भारत के अहिंसक, समझौतावादी और उदारता भरे मार्ग का समर्थन करते हैं, ताकि यह कठिन मोर्चा सुलह-सफाई के वातावरण में ही निपट जाए।

अध्याय 6: ये बन्धन अब टूटने ही चाहिए

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: नारी के प्रति गलत मान्यताएं किस तरह की कठिनाई पैदा करती हैं?

उत्तर: नारी के प्रति गलत मान्यताएं ऐसे कुहासे का प्रकोप पैदा करती हैं, जिसमें सही-गलत का भेद करना मुश्किल हो जाता है और समझदारी भी दुर्बुद्धि जैसी लगती है।

2. प्रश्न: मध्यकाल में नारी को पालतू पशु के समतुल्य समझने का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर: उसे पालतू पशु के समतुल्य समझे जाने के कारण वह अशक्त, असुरक्षित और पराधीनता के गहरे गर्त में गिरती चली गई।

3. प्रश्न: पति की दृष्टि में नारी को अक्सर क्या समझा जाता है?

उत्तर: पति की दृष्टि में उसे अक्सर कामुकता की आग बुझाने का एक खरीदा गया माध्यम, यानी कामिनी, रमणी और भोग्या के रूप में ही देखा जाता है।

4. प्रश्न: ससुराल में नारी को किस प्रकार की दासी समझा जाता है?

उत्तर: ससुराल में उसे एक ऐसी दासी समझा जाता है जिसे दिन-रात काम में जुटे रहना है और बदले में किसी अधिकार या सम्मान की अपेक्षा नहीं करनी है।

5. प्रश्न: आधी जनसंख्या (नारी) को दयनीय स्थिति में रखने का पुरुषों पर क्या असर पड़ता है?

उत्तर: आधी जनसंख्या को दयनीय स्थिति में रखने से पुरुष भी केवल घाटा ही सहते हैं और समस्त संसार नारी के गरिमापूर्ण लाभों से वंचित रह जाता है।

6. प्रश्न: विवाह के मामले में किसकी मर्जी को प्राथमिकता दी जाती रही है?

उत्तर: विवाह की बात तय करने में केवल अभिभावकों की मर्जी ही चलती रही है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, नारी की मौलिक प्रतिभा के खत्म होने के क्या कारण हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, नारी की मौलिक प्रतिभा इसलिए खत्म होती जा रही है क्योंकि उसे बाध्य परिस्थितियों में रहना पड़ता है। उसे पराये घर का कूड़ा समझा जाता है, पति उसे भोग की वस्तु समझता है और ससुराल वाले उसे अधिकारहीन दासी मानते हैं। इन परिस्थितियों में रहकर कोई भी अपनी मौलिकता खो सकता है।

2. प्रश्न: "अगर अपने घर की लड़की पराये घर का कूड़ा है तो दूसरे घरों का कूड़ा अपने घर में भी तो बहू के रूप में गृहलक्ष्मी की भूमिका निभाने की, आने की तैयारी में संलग्न है।" इस कथन से लेखक क्या तर्क दे रहे हैं?

उत्तर: इस कथन से लेखक तर्क दे रहे हैं कि लड़की-लड़के में भेदभाव करना मूर्खता है। अगर कोई अपनी बेटी को दूसरे घर का समझकर उपेक्षा करता है, तो उसे याद रखना चाहिए कि किसी और के घर की बेटी भी उसके घर बहू बनकर आ रही है, जिसे वह 'गृहलक्ष्मी' की तरह सम्मान देने की अपेक्षा रखता है। इसलिए यह दोहरा मापदंड अनुचित है।

3. प्रश्न: नारी को परदे या पिंजड़े में कैद रखने से उसकी क्षमता पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर: नारी को कैद में रखने से वह असहाय, अनुभवहीन और दूसरों पर आश्रित हो गई है। वह अपनी और अपने बच्चों की रक्षा करने की हिम्मत खो बैठी है और छोटे-मोटे पारिवारिक कार्यों जैसे बाजार या अस्पताल जाने में भी झिझकती है। इससे उसकी प्रगति के अवसर समाप्त हो जाते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने पंचायत चुनावों में महिलाओं के लिए 30% आरक्षण को किस बड़े परिवर्तन का संकेत माना है? इसका नर और नारी दोनों की सोच पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर: लेखक ने इस आरक्षण को एक छोटी झलक-झाँकी माना है, जो यह संकेत देती है कि नारी को अब कानूनी और सामाजिक स्तर पर उचित न्याय मिलने की संभावना बन रही है। इसका प्रभाव यह हुआ है कि नारी अब यह सोचने लगी है कि उसे हमेशा शासित क्यों रहना चाहिए और शासन में मिली भागीदारी को क्यों गँवाना चाहिए। वहीं, परिवार के पुरुष भी यह सोचने लगे हैं कि यदि उनके घर की कोई महिला शासन

में भागीदार बनती है तो पूरे परिवार का सम्मान और अधिकार बढ़ेगा, जिससे वे भी इस सुधार का स्वागत कर रहे हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, विवाह के बाद महिलाओं की प्रगति क्यों रुक जाती है और इसके लिए ससुराल वालों का क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?

उत्तर: लेखक के अनुसार, विवाह के बाद महिलाओं को मात्र एक खरीदी हुई दासी (क्रीतदासी) की भूमिका निभाने के लिए बाध्य किया जाता है, जिससे उनकी प्रगति के सभी अवसर छीन लिए जाते हैं। इससे वे अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी गँवा बैठती हैं। लेखक का तर्क है कि ससुराल वालों का यह उत्तरदायित्व होना चाहिए कि लड़की ने अपने मायके में जितनी योग्यता और सम्मान अर्जित किया है, उसे उससे भी आगे बढ़ाने का क्रम जारी रखें।

अध्याय 7: समय की नब्ज़ पहचानी जाए

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने महाकाल की हुंकार की तुलना किन प्राकृतिक शक्तियों से की है?

उत्तर: लेखक ने महाकाल की हुंकार की तुलना तूफान, घटाटोप वर्षा और बाँध तोड़ने वाले पानी के दबाव से की है।

2. प्रश्न: युगचेतना ने आकाश में कौन-सा उद्घोष गुंजायमान किया है?

उत्तर: युगचेतना ने "नर और नारी एक समान" का उद्घोष निखिल आकाश में गुंजायमान किया है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार कन्या और पुत्र के जन्म पर समाज की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए?

उत्तर: लेखक के अनुसार, कन्या के जन्म पर विलाप और पुत्र के जन्म पर बधाई नहीं होनी चाहिए, बल्कि दोनों के लिए समान भाव होना चाहिए।

4. प्रश्न: समाज में नारी को क्या कहकर उसे असहाय बनाया जाता रहा है?

उत्तर: नारी को "अबला" कहकर उसे असहाय, अनुभवहीन और अनुगामी बनाया जाता रहा है।

5. प्रश्न: बाल-विवाह के बंधन में बाँधने से लड़कियों पर क्या असर होता है?

उत्तर: बाल-विवाह के बंधन में बाँधने से उनकी योग्यता बढ़ाने के अवसर समाप्त हो जाते हैं और उन्हें एक पिंजड़े से दूसरे पिंजड़े में स्थानांतरित कर दिया जाता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "महाकाल का यह प्रथम आश्वासन है, जिसके पीछे पिछड़ों को ऊँचा उठाकर समता का धरातल बनाने के लिए वचनबद्ध रहने का दैवी शक्तियों ने आश्वासन दिलाया है।" इस वाक्य का क्या अर्थ है?

उत्तर: इस वाक्य का अर्थ है कि समय की शक्ति (महाकाल) ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि समाज में जो भी पिछड़े हैं, विशेषकर नारी, उन्हें ऊपर उठाकर समानता का दर्जा दिया जाएगा। यह एक दैवीय योजना है जिसका विरोध नहीं किया जा सकता।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि नारी-शिक्षा मात्र नौकरी दिलाने वाली फुलझड़ी बनकर समाप्त नहीं होगी?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि नारी-शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं है, बल्कि इसके साथ समानता और हर क्षेत्र में समान अवसर पाने की व्यवस्था भी जुड़ी हुई है। यह शिक्षा नारी को अपना महत्त्व, मूल्य और अधिकार समझने में मदद करेगी ताकि वह अनीतिपूर्ण बंधनों को तोड़ सके।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, नारी को घर से बाहर निकलने के लिए किसी संरक्षक की आवश्यकता क्यों नहीं होनी चाहिए?

उत्तर: लेखक तर्क देते हैं कि यदि नर और नारी परिवार के अंदर बिना भय के एक साथ रह सकते हैं, तो समाज रूपी बड़े परिवार में भी आवश्यक कार्यों के लिए आने-जाने हेतु उन्हें किसी संरक्षक की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। यह पराधीनता उसे अनुभवहीन और असहाय बनाती है, जिसे अब समाप्त होना चाहिए।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "लोकमानस भी समय की प्रचण्ड धारा के विपरीत बने रहने का देर तक दुराग्रह नहीं करता रह सकता।" इस कथन के माध्यम से लेखक सामाजिक परिवर्तनों की अनिवार्यता को कैसे सिद्ध करते हैं?

उत्तर: इस कथन के माध्यम से लेखक यह सिद्ध करते हैं कि सामाजिक परिवर्तन, विशेषकर नारी-उत्थान, एक ऐसी शक्तिशाली धारा (समय की प्रचंड धारा) है जिसका विरोध कोई भी समाज लंबे समय तक नहीं कर सकता। जैसे तूफान मजबूत पेड़ों को उखाड़ देता है, वैसे ही यह परिवर्तन की धारा पुरानी और गलत मान्यताओं को समाप्त कर देगी। इसलिए, समाज के लिए बुद्धिमानी इसी में है कि वह इस परिवर्तन को स्वीकार करे।

2. प्रश्न: विवाह के संबंध में लेखक ने कौन-से तीन प्रमुख प्रश्न उठाए हैं जो समाज की न्याय-निष्ठा और दूरदर्शिता पर सवाल खड़े करते हैं?

उत्तर: लेखक ने तीन प्रमुख प्रश्न उठाए हैं: (१) विवाह का निर्णय केवल अभिभावकों की मर्जी से क्यों हो? (२) अगर लड़की को सुयोग्य बनाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है, तो बाल-विवाह क्यों किया जाए? (३) विवाहित होने के बाद लड़की की प्रगति के सभी अवसर क्यों समाप्त हो जाने चाहिए और उसे केवल दासी की भूमिका क्यों निभानी चाहिए? ये प्रश्न समाज की न्याय-निष्ठा और दूरदर्शिता पर सवाल उठाते हैं और विचार करने पर विवश करते हैं कि क्या वे स्वयं ऐसी बाध्यता सहन कर पाते।

अध्याय 8: दाम्पत्य की गरिमा भुलाई न जाए

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: पति का अपनी पत्नी के प्रति सहज उत्तरदायित्व क्या बनता है?

उत्तर: पति का सहज उत्तरदायित्व यह बनता है कि वह अपनी पत्नी को कम-से-कम अपनी योग्यता के स्तर तक पहुँचाने के लिए प्राणपण से प्रयत्न करे।

2. प्रश्न: विवाह से कामुकता की आग बुझाने का कानूनी अधिकार मिलने पर भी कौन-से अनुबन्ध व्यक्ति को बाध्य करते रहते हैं?

उत्तर: नैतिकता के कठोर अनुबन्ध व्यक्ति को इस दिशा में उदासीनता न बरतने के लिए बाध्य करते रहते हैं।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, बिना सोचे-समझे कामुकता में लिप्त होना किन तीन चीजों पर कुठाराघात करने जैसा है?

उत्तर: यह अपनी आर्थिक स्थिति, पत्नी के स्वास्थ्य और बच्चों के भविष्य पर कुठाराघात करने जैसा है।

4. प्रश्न: विवाह कब होना चाहिए?

उत्तर: विवाह तब होना चाहिए जब दोनों (पति-पत्नी) एक-दूसरे को सहमत कर सकने और आगे बढ़ाने में योगदान देने की स्थिति पर विचार कर चुके हों।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मानवीय गरिमा को शोभायमान रखने वाली नीतिमत्ता क्या है?

उत्तर: मानवीय गरिमा को शोभायमान रखने वाली नीतिमत्ता यह है कि पति-पत्नी एक-दूसरे की प्रगति के लिए आजीवन समर्पित रहें।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: यदि पति अपनी पत्नी की योग्यता बढ़ाने में उपेक्षा बरतता है, तो उसके विवाह को लेखक ने क्या संज्ञा दी है और क्यों?

उत्तर: लेखक ने इसे "अपहरण" की संज्ञा दी है। ऐसा इसलिए क्योंकि विवाह का उद्देश्य केवल कामुकता की पूर्ति नहीं, बल्कि एक-दूसरे को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाना भी है। इस उत्तरदायित्व से मुँह मोड़ना पत्नी के अधिकारों का हनन करने जैसा है।

2. प्रश्न: सन्तानोत्पादन के साथ आज के समय में कौन-सी नई समस्याएँ जुड़ गई हैं?

उत्तर: आज के समय में सन्तानोत्पादन के साथ कई नई समस्याएँ जुड़ गई हैं, जैसे—बच्चों का सभ्यजनों की तरह लालन-पालन करना, उनकी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करना, और खेलने के लिए घरों में खुले स्थान का अभाव। इस घोर महँगाई के युग में इन जिम्मेदारियों को निभाना बहुत कठिन है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, स्वच्छन्द यौनाचार दाम्पत्य जीवन में सबसे बड़ी बाधा क्यों है? इसके क्या दुष्परिणाम होते हैं?

उत्तर: यह सबसे बड़ी बाधा है क्योंकि इसके फलस्वरूप पति-पत्नी एक-दूसरे को शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार बनाते हैं और बेवजह सन्तानोत्पादन का असाधारण भार उठाते हैं, जो कि एक अनीति है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "जितना समय, धन और मनोयोग सन्तान के लिए लगाया जाता है, उतना कष्टसहन यदि पति-पत्नी एक-दूसरे के दायित्व के लिए करते रहें तो उसे हर दृष्टि से कहीं अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण माना जाएगा।" इस कथन का विश्लेषण करें।

उत्तर: इस कथन का विश्लेषण यह है कि दम्पति को अपनी ऊर्जा और संसाधन सबसे पहले एक-दूसरे के विकास पर लगाने चाहिए। सन्तान की जिम्मेदारी उठाने से पहले उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे एक-दूसरे को समर्थ और योग्य बनाने में सफल हुए हैं या नहीं। एक-दूसरे की प्रगति में निवेश करना, सन्तानोत्पादन की भारी जिम्मेदारी उठाने से कहीं अधिक बुद्धिमानी भरा कदम है क्योंकि एक समर्थ दम्पति ही बच्चों का बेहतर भविष्य सुनिश्चित कर सकता है।

2. प्रश्न: "विपन्न परिस्थितियों में पला हुआ बालक अपने लिए, अभिभावकों के लिए और समस्त संसार के लिए अभिशाप बनकर ही रह सकता है।" इस कथन से लेखक क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: इस कथन से लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि बिना सोचे-समझे और बिना पर्याप्त संसाधनों के सन्तान पैदा करना एक बहुत बड़ी सामाजिक और पारिवारिक भूल है। ऐसी परिस्थितियों में पले-बढ़े बच्चे उचित संस्कार और अवसर न मिलने के कारण समाज के लिए समस्या बन सकते हैं, जिससे न केवल परिवार बल्कि पूरे संसार को हानि होती है। अतः, सन्तानोत्पादन एक अत्यंत जिम्मेदारी भरा निर्णय होना चाहिए।

अध्याय 9: दुश्चिन्तन हटाएँ—सृजन अपनाएँ

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: नशेबाजी के बाद आत्मघात के लिए प्रेरित करने वाली दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति कौन-सी है?

उत्तर: नशेबाजी के बाद आत्मघात के लिए प्रेरित करने वाली प्रवृत्ति कामुकता है।

2. प्रश्न: अक्षील चिन्तन से मानसिक क्षमताओं पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: अक्षील चिन्तन से मानसिक क्षमताओं का सर्वनाश होता है और मस्तिष्क उच्चस्तरीय चिन्तन करने में सक्षम नहीं रहता।

3. प्रश्न: नर और नारी के बीच कैसा रिश्ता रहना चाहिए?

उत्तर: नर और नारी के बीच भाई-भाई जैसा या बहन-बहन जैसा सहयोगी रिश्ता रहना चाहिए।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में प्रजनन को पूर्ण विराम क्यों दे देना चाहिए था?

उत्तर: ऐसा इसलिए करना चाहिए था ताकि इक्कीसवीं सदी के लिए ऐसी स्थिति बनाई जा सके जिसमें प्रगति का सरंजाम जुटाना संभव हो सके।

5. प्रश्न: किन तीन महामानवों ने विवाह को सार्थक बनाने के लिए उच्चस्तरीय आदर्शों को अपनाए रखा?

उत्तर: लोकनायक जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी एवं जापान के गाँधी कागावा ने ऐसा किया था।

6. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सन्तानोत्पादन में प्रवृत्त होने के बाद दम्पति किस जंजाल में फँस जाते हैं?

उत्तर: वे लोभ-मोह के ऐसे गहरे जंजाल में फँस जाते हैं कि फिर आदर्शों का निर्वाह करना संभव नहीं रहता।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: कामुकता ने नारी के प्रति पूज्यभाव को किस प्रकार नष्ट किया है?

उत्तर: कामुकता ने नारी के प्रति पूज्यभाव और उसके उत्कर्ष में सहायता देने वाली सदाशयता को बुरी तरह छिन्न-भिन्न कर दिया है। इसके कारण नारी को केवल भोग की वस्तु के रूप में देखा जाने लगा, जिससे उसके दैवी और सम्मानित स्वरूप का अवमूल्यन हुआ।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "सन्तानोत्पादन की जब अनिवार्य आवश्यकता सूझ पड़े, तभी उस खौलते पानी में हाथ डालना चाहिए"?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि वे सन्तानोत्पादन को एक बहुत बड़ी और कठिन जिम्मेदारी मानते हैं। उनका मानना है कि यह निर्णय तभी लेना चाहिए जब इसकी सामाजिक और पारिवारिक आवश्यकता वास्तव में अनिवार्य हो, अन्यथा यह प्रवृत्ति व्यक्ति की जीवनी शक्ति और संसाधनों को नष्ट कर देती है।

3. प्रश्न: व्यस्त और प्रतिबंधित महिलाएँ भी अपने परिवार में प्रगतिशीलता के बीज कैसे बो सकती हैं? कोई तीन उपाय बताएँ।

उत्तर: वे अपने परिवार में श्रमशीलता, मितव्ययिता, शिष्टता, सुव्यवस्था और उदार सहकारिता जैसे सद्गुणों के लिए उत्साह पैदा कर सकती हैं; परिवार के सदस्यों को संयम और प्रगतिशीलता का पक्षधर बनाने का प्रयत्न कर सकती हैं; तथा अपने छोटे क्षेत्र से कुरीतियों और मूढ़ मान्यताओं को उखाड़ फेंकने के लिए प्रयास कर सकती हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक "एक और एक मिलकर ग्यारह बनने की सम्भावना" के माध्यम से आदर्श विवाह की क्या परिभाषा देते हैं?

उत्तर: इस मुहावरे के माध्यम से लेखक यह समझाते हैं कि आदर्श विवाह का उद्देश्य दो लोगों की शक्तियों को जोड़कर उन्हें कई गुना बढ़ाना है। यह केवल व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं, बल्कि लोक मंगल और सामाजिक

प्रगति जैसे उच्चस्तरीय आदर्शों को पूरा करने के लिए एक संयुक्त प्रयास है। इसमें दम्पति एक-दूसरे के सहयोगी बनकर बड़ी कठिनाइयों को सरल करते हैं और समाज के लिए बड़े काम करते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, युग-धर्म का पालन करने के लिए विभिन्न परिस्थितियों में रहने वाली महिलाएँ (जैसे नौकरीपेशा, सेवानिवृत्त, विधवा, परित्यक्ता, अविवाहित) क्या-क्या योगदान दे सकती हैं? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: लेखक के अनुसार, सभी महिलाएँ युग-धर्म (महिला जागरण) में योगदान दे सकती हैं।

- जिनके उत्तरदायित्व हलके हैं: वे आराम और मोह-माया से समय बचाकर अपने सम्पर्क क्षेत्र को प्रगति के पथ पर ले जा सकती हैं।

- नौकरी करने वाली महिलाएँ (जैसे अध्यापिका): वे अपनी छात्राओं और उनके परिवारों से सम्पर्क साधकर प्रगतिशीलता का संदेश दे सकती हैं।

- सेवानिवृत्त महिलाएँ: वे नवजागरण अभियान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकती हैं।

- विधवाएँ व परित्यक्ताएँ: वे दुर्भाग्य का रोना रोने की बजाय समय की माँग को पूरा करने में लगकर अपने कुयोग को सुयोग में बदल सकती हैं।

- अविवाहित लड़कियाँ: वे नौकरी या दूसरों पर आश्रित रहने की बजाय महिला-जागरण के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनकर अपने जीवन को सार्थक बना सकती हैं।

अध्याय 10: दो बड़े कदम—शिक्षा और स्वावलम्बन

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: नारी-उत्थान के लिए सबसे पहली आवश्यकता क्या है?

उत्तर: नारी-उत्थान के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता शिक्षा-सम्बर्द्धन (शिक्षा को बढ़ाना) की है।

2. प्रश्न: प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा के लिए लेखक क्या समाधान सुझाते हैं?

उत्तर: लेखक का समाधान है कि शिक्षित महिलाएँ अपने घरेलू कार्यों से समय निकालकर समीप के क्षेत्र में प्रौढ़-पाठशालाएँ चलाएँ और दूसरी शिक्षित महिलाओं को भी इस कार्य के लिए प्रोत्साहित करें।

3. प्रश्न: अक्षरज्ञान होने के बाद महिलाओं को किस प्रकार की पुस्तकें मिलनी चाहिए?

उत्तर: उन्हें ऐसी सरल पुस्तकें मिलनी चाहिए जो व्यक्तित्व निखारने, परिवार को सुदृढ़ बनाने और अपने समुदाय को समुन्नत बनाने का मार्गदर्शन दे सकें।

4. प्रश्न: शिक्षा के बाद दूसरा महत्वपूर्ण कदम कौन-सा है?

उत्तर: शिक्षा के साथ ही दूसरा महत्वपूर्ण कदम स्वावलम्बन की दिशा में उठाना है।

5. प्रश्न: नारी का अवमूल्यन किस कारण से हुआ है?

उत्तर: नारी का अवमूल्यन इस कारण हुआ है कि दिन-रात गृहकार्यों में लगी रहने पर भी वे प्रत्यक्ष रूप से कुछ कमाई करती दिखाई नहीं पड़ती।

6. प्रश्न: लेखक ने किस देश का उदाहरण दिया है जहाँ कुटीर उद्योगों की बहुत सुविधा है?

उत्तर: लेखक ने जापान का उदाहरण दिया है, जहाँ कुटीर उद्योगों के लिए हर क्षेत्र में सुविधा उपलब्ध है।

7. प्रश्न: महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बन की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर: उन्हें आर्थिक स्वावलम्बन की आवश्यकता इसलिए है ताकि उन्हें हर घड़ी परावलम्बन (दूसरों पर निर्भरता) का दबाव न सहना पड़े और वे अपनी इच्छानुसार प्रगति के लिए साधन जुटा सकें।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, भारत के लेखकों और प्रकाशकों ने किस महत्वपूर्ण कमी को नजरअंदाज किया है और इसकी पूर्ति कैसे की जा सकती है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, देश के लेखकों और प्रकाशकों ने ऐसी सरल पुस्तकें बनाने पर ध्यान नहीं दिया है जो महिलाओं को उनकी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठा सकें। इस कमी को पूरा करने के लिए जनस्तर की स्वेच्छासेवी संस्थाओं को आगे आना चाहिए और ऐसा साहित्य तैयार करना चाहिए।

2. प्रश्न: स्वावलम्बन के लिए सहकारिता के आधार पर कुटीर उद्योग कैसे चलाए जा सकते हैं?

उत्तर: स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कुटीर उद्योग ढूँढे जा सकते हैं और उन्हें सहकारिता के आधार पर चलाया जा सकता है। इसमें कच्चा माल खरीदने और तैयार माल बेचने का काम स्थानीय सहकारी समितियों द्वारा किया जा सकता है।

3. प्रश्न: पुरुषों की इस विचार-विकृति से कैसे निपटा जा सकता है कि "स्त्रियाँ कुछ कमाने लगे तो इसमें हेठी (अपमान) है"?

उत्तर: इस विचार-विकृति से निपटने के लिए आवश्यक है कि गरीब और अमीर, सभी घरों में कुटीर उद्योग जैसे स्वावलम्बन के उपायों का प्रचलन किया जाए। जब यह आम हो जाएगा तो इसे अपमानजनक नहीं समझा जाएगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "स्वावलम्बन एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसे हर व्यक्ति द्वारा अपनाया जाना चाहिए।" इस कथन का विश्लेषण करें। लेखक ने इसे केवल गरीबों तक सीमित क्यों नहीं रखा है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि स्वावलम्बन केवल आर्थिक मजबूरी नहीं, बल्कि एक सम्मानजनक गुण है। लेखक ने इसे केवल गरीबों तक सीमित नहीं रखा क्योंकि उनका उद्देश्य नारी के अवमूल्यन की उस मानसिकता को तोड़ना है जो उसकी कमाई न करने से जुड़ी है। जब सभी वर्गों की महिलाएँ स्वावलम्बी होंगी,

तो यह प्रवृत्ति एक सामाजिक आदर्श बन जाएगी और पुरुष-प्रधान समाज में इसे अपमान की दृष्टि से नहीं देखा जाएगा।

2. प्रश्न: नारी-उत्थान के लिए शिक्षा और स्वावलम्बन को "दो बड़े कदम" क्यों कहा गया है? ये दोनों एक-दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं?

उत्तर: इन्हें "दो बड़े कदम" इसलिए कहा गया है क्योंकि ये नारी को मानसिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं। शिक्षा उसे अपना महत्त्व, अधिकार और भविष्य समझने की दृष्टि देती है, जबकि स्वावलम्बन उसे पराधीनता से मुक्त कर आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। ये दोनों आपस में जुड़े हैं क्योंकि शिक्षित महिला स्वावलम्बन के बेहतर अवसर प्राप्त कर सकती है, और स्वावलम्बी महिला अपनी तथा अपने बच्चों की शिक्षा के लिए बेहतर साधन जुटा सकती है।

अध्याय 11: नारी-अवमूल्यन को रोका जाए

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: स्वीडन में बच्चों के पालन-पोषण के संबंध में क्या नया कानून बनाया गया है?

उत्तर: स्वीडन में यह कानून बनाया गया है कि जैसे महिलाएँ प्रसूति के लिए छुट्टी लेती हैं, वैसे ही पुरुष भी बच्चों के पालन-पोषण में अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए छुट्टी लेकर घर पर रहेंगे।

2. प्रश्न: जापान की महिलाओं की राजनीतिक सफलता का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: जापान में महिलाओं की राजनीतिक सफलता का प्रभाव भारत पर यह पड़ा कि यहाँ भी महिलाओं को (पंचायतों में) ३० प्रतिशत स्थान सुरक्षित कराने का अवसर मिला है।

3. प्रश्न: अंग्रेजों ने भारत छोड़ते समय समझौते की नीति क्यों अपनाई?

उत्तर: अंग्रेजों ने बदलते समय को भाँप लिया था, इसलिए उन्होंने टकराव से बचकर समझौते की नीति अपनाई, ताकि विदाई के समय कटुता के स्थान पर सद्भावना बनी रहे।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, नारी-मुक्ति आन्दोलन पश्चिमी देशों में किस रूप में उभर रहा है?

उत्तर: पश्चिमी देशों में यह आन्दोलन कटुता भरे वातावरण में संघर्ष और प्रतिशोध के रूप में उभर रहा है।

5. प्रश्न: लेखक भारत में नारी समस्या के समाधान के लिए किस रीति-नीति को अपनाने की सलाह देते हैं?

उत्तर: लेखक भारत के अहिंसक सत्याग्रह की रीति-नीति को अपनाने की सलाह देते हैं, ताकि यह कठिन मोर्चा सुलह-सफाई और समझौतावादी उदारता के वातावरण में निपट जाए।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: पुरुषों ने स्वीडन में बच्चों के पालन-पोषण के लिए छुट्टी लेने पर क्या आपत्ति जताई और उसे क्यों रद्द कर दिया गया?

उत्तर: पुरुषों ने यह आपत्ति जताई कि इससे उनके अनुभव में कमी आएगी और पदोन्नति रुकेगी। इस आपत्ति को यह कहकर रद्द कर दिया गया कि यही तर्क महिलाएँ भी दे सकती हैं, क्योंकि उन्हें भी तो घाटा उठाना पड़ता है। जब सन्तानोत्पादन में पुरुष भी उत्साह दिखाता है, तो उसे जिम्मेदारी से नहीं भागना चाहिए।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "जो होकर ही रहना है, उसके साथ टकराने की अपेक्षा लाभ इसी में है कि समय से पूर्व समझौता कर लिया जाए"?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि नारी-उत्थान एक अटल परिवर्तन (भवितव्यता) है जिसे रोका नहीं जा सकता। यदि पुरुष वर्ग समय रहते इस बदलाव को स्वीकार कर लेता है, तो टकराव और कटुता से बचा जा सकता है, जिससे दोनों पक्षों का लाभ होगा।

3. प्रश्न: नारी समस्या के पीछे प्रमुख बाधा क्या है और उसका समाधान क्या है?

उत्तर: इसके पीछे प्रमुख बाधा पुरुषों का अहंकारी मानस और अनीतिमूलक दुर्भावनाएँ हैं। इसका समाधान यह है कि औचित्य को अपनाया जाए और सहयोग की नीति अपनाई जाए, क्योंकि संघर्ष में उलझने से दोनों पक्षों को हानि होगी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने नारी-अधिकारों की तुलना हरिजनों-आदिवासियों को दिए गए आरक्षण से क्यों की है? इसके माध्यम से वे पुरुष वर्ग को क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना यह बताने के लिए की है कि जैसे समाज ने पिछड़ी जातियों के प्रति हुई गलतियों का प्रायश्चित्त करने के लिए आरक्षण जैसी विशेष सुविधाएँ दीं, उसी प्रकार पुरुष वर्ग को भी नारी के प्रति हुए अन्याय को स्वीकार कर उसे समानता का अधिकार देना चाहिए। वे यह संदेश देना चाहते हैं कि यदि यह सद्भावना समय रहते नहीं दिखाई गई, तो जैसे अन्य सामाजिक क्रांतियाँ हुई हैं, वैसा ही टकराव भरा संघर्ष हो सकता है, जिससे समाज को अधिक घाटा उठाना पड़ेगा।

2. प्रश्न: "नर और नारी, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।" इस कथन के आधार पर लेखक पारिवारिक और सामाजिक संबंधों के लिए क्या आदर्श प्रस्तुत करते हैं?

उत्तर: इस कथन के आधार पर लेखक यह आदर्श प्रस्तुत करते हैं कि नर और नारी के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। उन्हें दो हाथ या दो पैर की तरह परस्पर सहयोगी और समान महत्त्व का अधिकारी मानना चाहिए। पारिवारिक स्तर पर पति-पत्नी के बीच स्वामी-दास का नहीं, बल्कि भाई-भाई या बहन-बहन जैसी सहकारिता और मैत्री का संबंध होना चाहिए। सामाजिक स्तर पर भी एकता और सद्भावना का वातावरण विकसित होना चाहिए, जिससे दोनों मिलकर प्रगति कर सकें।

अध्याय 12 और 13: एकता और समता का सुयोग बने / प्रजनन पर तो रोक लगे ही

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: पति और पत्नी के बीच कैसा संबंध होना चाहिए?

उत्तर: उनके बीच दास और स्वामी का नहीं, बल्कि भाई-भाई या बहन-बहन के बीच जैसी सद्भावना और सहकारिता का संबंध होना चाहिए।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, किस पुण्य वेला (समय) में यौनाचार जैसे कार्य निषिद्ध हैं?

उत्तर: युगसन्धि की पुण्य वेला में यौनाचार जैसे कार्य निषिद्ध हैं।

3. प्रश्न: प्रजनन को रोकने का एक प्रमुख कारण क्या बताया गया है?

उत्तर: संसार का प्रमुख संकट बढ़ती जनसंख्या (बहुप्रजनन) है, जिसे रोकने से प्रगति के प्रयास सफल हो सकते हैं।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, युद्धकाल में देश हर समर्थ नागरिक से क्या अपेक्षा करता है?

उत्तर: युद्धकाल में देश हर समर्थ नागरिक को सेना में अनिवार्य रूप से भर्ती होने के लिए कहता है।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, चेतना-क्षेत्र का हिमालय इन दिनों कहाँ स्थित है और वह क्या कार्य कर रहा है?

उत्तर: चेतना-क्षेत्र का हिमालय इन दिनों शान्तिकुञ्ज में है, जो सारे विश्व में नारी-जागरण जैसी बहुमुखी प्रक्रियाओं का सूत्र-संचालन कर रहा है।

6. प्रश्न: जिन्हें युगसन्धि-अवधि में विवाह करना आवश्यक हो, उन्हें लेखक क्या करने की सलाह देते हैं?

उत्तर: वे दहेज, जेवर और धूम-धाम से रहित विवाह करें, और यदि ऐसा संभव न हो तो शान्तिकुञ्ज आकर बिना खर्च के विवाह सम्पन्न करा लें।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने यौनाचार में लिप्त होने की तुलना "बीस वर्ष की सजा झेलने" से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना इसलिए की है क्योंकि एक बार सन्तानोत्पादन के चक्र में फँसने के बाद नर को लगभग बीस वर्षों तक अपना सारा कौशल और समय सिर्फ बड़े हुए परिवार की जरूरतें पूरी करने में ही लगाना पड़ता है, जिससे वह कोई अन्य महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर पाता।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, युगसन्धि के समय प्रजनन पर रोक क्यों लगनी चाहिए? इसके कौन-से तीन प्रमुख कारण बताए गए हैं?

उत्तर: युगसन्धि के समय प्रजनन पर रोक लगनी चाहिए क्योंकि: (१) इस समय सूक्ष्मजगत में उथल-पुथल रहती है, जिसका दुष्प्रभाव होने वाली संतान पर पड़ सकता है। (२) यह समय हर नर-नारी के लिए नारी-पुनरुत्थान के महायज्ञ में समर्पित होने का है। (३) जनसंख्या-वृद्धि का संकट इतना बड़ा है कि इस पर रोक लगाए बिना कोई भी प्रगति का उपाय सफल नहीं हो सकता।

3. प्रश्न: नारी-उत्कर्ष के लिए दहेज-प्रथा को समाप्त करना अनिवार्य क्यों है?

उत्तर: दहेज-प्रथा नारी का अवमूल्यन करती है और उसे एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत करती है। इसे समाप्त करना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि यह समानता के सिद्धांत के विरुद्ध है और परिवारों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ डालता है। दहेज-मुक्त विवाह नारी को सम्मानजनक स्थान दिलाने की दिशा में एक ठोस कदम है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "कुसमय के गर्भाधारण जब फलित होकर धरती पर आते हैं, तो उनमें अनेक विकृतियाँ पाई जाती हैं।"

इस कथन के माध्यम से लेखक प्रजनन और समय के बीच क्या संबंध स्थापित कर रहे हैं?

उत्तर: इस कथन से लेखक यह स्थापित कर रहे हैं कि प्रजनन केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक और सामाजिक जिम्मेदारी है, जो सही समय और सही चेतना के साथ होनी चाहिए। उनका तर्क है कि युगसन्धि जैसी विशेष अवधि, जब सूक्ष्मजगत में बड़े परिवर्तन हो रहे हों, तब गर्भाधारण से उत्पन्न संतान पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। अतः, एक दिव्य वंश-परम्परा के लिए तपस्वियों की तरह संयम बरतते हुए सही समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

2. प्रश्न: लेखक ने नारी-जागरण को "ईश्वर के तत्त्वावधान में" होने वाला कार्य क्यों कहा है? इसका इस अभियान से जुड़ने वालों पर क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: लेखक ने इसे ईश्वरीय कार्य इसलिए कहा है ताकि इस अभियान को एक सामान्य सामाजिक सुधार से ऊपर उठाकर एक आध्यात्मिक कर्तव्य का दर्जा दिया जा सके। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह पड़ता है कि इससे जुड़ने वाले लोग इसे मात्र एक काम नहीं, बल्कि एक युग-धर्म और ईश्वरीय आमंत्रण के रूप में देखते हैं। इससे उन्हें सामान्य लोभ-मोह और स्वार्थ से ऊपर उठकर त्याग और समर्पण की प्रेरणा मिलती है, ठीक वैसे ही जैसे बुद्ध के अनुयायी परिव्राजक बन गए थे या स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया था।

नारी: परिभाषाएँ, स्वरूप और शक्ति

मातृशक्ति - विधाता की वह संरचना जो माता और देवी के रूप में परमपूज्य है। जीवसृष्टि की संरचना करने वाली आदिशक्ति महामाया, जिसे विधाता और माता भी कहते हैं।

- **नारी (देवी रूप में)** - वह जो मानुषी (मनुष्य) दिखाई देते हुए भी वस्तुतः देवी है। व्यवहार में उसे तुष्टि, तृप्ति और शान्ति के रूप में अनुभव किया जाता है।

- **नारी (आत्मिक क्षेत्र में)** - आत्मिक क्षेत्र में नारी ही भक्ति, शक्ति और समृद्धि है।

- **शक्तिपूजा** - वह समस्त विधि-विधान जो इस मंतव्य को हृदयंगम कराता है कि संसार में जो कुछ भी सशक्त, सम्पन्न और सुन्दर है, उसकी उत्पत्ति में नारीतत्त्व की ही प्रमुख भूमिका है।

- **साधना से सिद्धि की परम्परा** - महाशक्ति के सूक्ष्म स्वरूपों (जैसे श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा, क्षमता) का वरण करने के आधार पर प्रकट होने वाली परम्परा।

- **मध्यकालीन सामन्तवादी अन्धकार युग** - वह समय जब नारी की मूलसत्ता और आत्मा को भुला दिया गया और उसे अबला, कामिनी, रमणी, भोग्या व क्रीतदासी जैसी घिनौनी स्थिति में रहने योग्य ठहराया गया।

- **एक और एक ग्यारह बनना** - जब नर और नारी समान पंक्ति में रखे जाते हैं तो उनकी संयुक्त शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसे महामानवों ने विवाह के माध्यम से इस संभावना को सार्थक बनाया था।

- **एक में से एक घटाकर शून्य बचना** - जब नर और नारी को ऊँच-नीच के भेदभाव से देखा जाता है, तो दोनों ही पिछड़ेपन की दयनीय स्थिति में पहुँच जाते हैं।

- **इक्कीसवीं सदी** - महापरिवर्तनों की वह वेला जिसे "नारी सदी" के नाम से भी जाना जाता है, जिसमें नारी का खोया हुआ वर्चस्व उसे पुनः प्राप्त होगा।

- **विवाह (अपहरण के रूप में)** - वह विवाह जिसमें पति अपनी पत्नी को अपनी योग्यता के स्तर तक पहुँचाने के लिए प्रयत्न करने के अपने सहज उत्तरदायित्व की उपेक्षा करता है।

- **मानवीय गरिमा को शोभायमान रखने वाली नीतिमत्ता** - यह कि पति-पत्नी एक-दूसरे की प्रगति के लिए आजीवन पूरी तरह समर्पित रहें।

- **युग-धर्म (नारियों के लिए)** - बचे हुए समय को आरामतलबी या मोह-माया में न लगाकर अपने सम्पर्क-क्षेत्र को प्रगति-पथ पर आगे बढ़ाने के लिए योगदान देना।

- **युगसन्धि** - इक्कीसवीं सदी के पूर्व के बारह वर्ष, जिन्हें महापरिवर्तनों का समय माना गया है। यह पुण्य वेला है जिसमें यौनाचार जैसे कार्य निषिद्ध हैं और जिसे प्रजनन-कृत्य को विराम देने का समय माना गया है।